Teacher Name: A.J. AFTAB
Department: Psychology
Topic Name: Experimental Method
Class: B.A. Part I (Hons).
Paper: I Paper.

P1

Critically evaluate Cannon-Bard theory Date 28.5.20
OR: Hypothalamic theory of emotion:

हाइपोथैलामिक सिद्धान्त का प्रतिपादन कैनन तथा बार्ड ने किया। यह सिद्धान्त वास्तव में संवेग के जेम्स-लान्जे सिद्धान्त के विरोध में विकसित हुआ। James तथा Lange ने सहानुभूतिक स्नायु-तंत्र को संवेग का आधार माना और कहा कि संवेगी उद्दीपन से जब सहानुभूतिक तंत्र उत्तेजित हो जाता है तो भिन्न-भिन्न प्रकार के आन्तरिक परिवर्तन घटित होते हैं, जिनकी चेतना ही संवेग है। परन्तु Cannon ने इस विचार को स्वीकार नहीं किया और कहा कि संवेग का आधार सहानुभूतिक स्नायु तंत्र नहीं है बल्कि Hypothalamus है। इसीलिए Cannon-Bard theory को Hypothalamic theory भी कहते हैं।

इस सिद्धान्त के अनुसार जब कोई ग्राहक जैसे आँख या कान, किसी संवेगात्मक उद्दीपन से उत्तेजित होता है तो स्नायु-प्रवाह उत्पन्न हो कर Hypothalamus में पहुंचता है। वहाँ वह स्नायु-प्रवाह दो मार्गों में विभाजित हो कर एक मार्ग आन्तरिक अंगों में और दूसरा मार्ग cortex में एक ही समय में पहुंचता है। आन्तरिक अंगों में स्नायु-प्रवाह के पहुंचने पर नाना प्रकार के शारीरिक परिवर्तन होने लगते हैं और उधर cortex में स्नायु-प्रवाह के पहुँचने पर संवेगात्मक अनुभूति होती है। अतः शारीरिक परिवर्तन तथा संवेगात्मक अनुभव एक ही साथ होते हैं।

Cannon ने एक बिल्ली पर प्रयोग किया। जब बिल्ली के सहानुभूतिक स्नायु को नष्ट कर दिया गया तो भी कुत्ते को देख कर बिल्ली में क्रोध तथा भय का संवेग

लेकिन हाइपोथैलेमस को नष्ट कर देने पर न तो क्रोध का संवेग हुआ और न भय का। इस प्रयोग से प्रमाणित हुआ कि संवेग का केन्द्र या आधार ~~वास्तव~~ (वास्तव में हाइपोथैलेमस है, सहानुभूतिक स्नायु-तंत्र नहीं।

Criticism आलोचना :

इस सिद्धान्त की आलोचना निम्नलिखित आधारों पर की गयी है।

1. यह सिद्धान्त हाइपोथैलेमस पर निर्भर करता है, परन्तु हाइपोथैलेमस में इतनी क्षमता नहीं होती है कि वह संवेगी तथा असंवेगी स्नायु-प्रवाहों की पहचान कर सके। अतः हाइपोथैलेमस को संवेग का केन्द्र मानना गलत होगा।
2. जब व्यक्ति में संवेग उत्पन्न होता है तो वह देर तक कायम रहता है परन्तु हाइपोथैलेमस में इतनी क्षमता नहीं होती है कि संवेग को अधिक देर तक कायम रख सके। इस बात की पुष्टि लैश्ले ने अपने प्रयोगात्मक अध्ययनों के आधार पर की है।
3. हाइपोथैलेमस को उत्तेजित करने पर संवेगात्मक व्यवहार देखे जाते हैं, परन्तु ये व्यवहार स्वाभाविक रूप से उत्पन्न व्यवहारों से भिन्न होते हैं।
4. Arnold ने अपने सिद्धान्त में कहा है कि क्रोध में उप सहानुभूतिक स्नायु-मंडल, भय में सहानुभूतिक स्नायु-मंडल तथा उल्लास में मुख्य उप-सहानुभूतिक स्नायु-मंडल का हाथ होता है। अतः कह सकते हैं कि Cannon-Bard का संवेग असफल है।

परन्तु इन दोषों के बावजूद इस सिद्धान्त को अपनी अलग मान्यता है। Cannon-Bard ने ही सर्वप्रथम हाइपोथैलेमस के महत्व को समझा तथा उसकी विस्तृत व्याख्या अपने सिद्धान्त में की है।